भाषा । साहित्य । सवाल

प्रश्नचिह्न

मां जब भी होती है अकेली
गाती है विवाह गीत
मां के गीतों के स्वर से
जिंदा हो उठता है घर आंगन
मां अपनी गीतों में अक्सर
याद करती है
पुरखे पुरनिया को।

~ योगेंद्र पांडेय

वर्ष : 03 | अंक : 27 | जून 2026

9 789360 682170

आवरण : प्रतिभा मिश्रा

संपादक : आलोक रंजन

भाषा । साहित्य । सवाल

प्रश्नचिह्न

जून 2026 । सत्ताईसवाँ अंक

प्रबंध सम्पादकः
राहुल राज

प्रबंध सहयोगः
सौरव कुमार भारती

सम्पादक
आलोक रंजन

आवरणः वंशीलाल परमार
रेखांकनः श्वेता कुमारी

अक्षर संयोजन
खुशी

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए प्रश्नचिह्न पत्रिका समूह का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही पत्रिका इसके लिए उत्तरदायी है।

वार्षिक मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	600.00 रुपये
संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए-	1500.00 रुपये
विदेशों में-	$25

एक प्रति का मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	50.00 रुपये
संस्थाओं के लिए-	100.00 रुपये
विदेशों में-	$10

विज्ञापन दरें :

बाहरी कवर-	20,000.00 रुपये
अन्दर कवर-	15,000.00 रुपये
अन्दर पूरा पृष्ठ-	10,000.00 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ-	7,000.00 रुपये

संपादकीय कार्यालयः

8/54 - ए, प्रथम तल, डबल स्टोरी,
विजय नगर, दिल्ली - 110009
मोबाइल : 9717489554

ई-मेल: prashanchinha.patrika@gmail.com
infoprashanchinha.patrika@gmail.com

वेबसाईट: www.prashanchinha.in

फेसबुक: https://www.facebook.com/prasnacihnapatrika

इंस्टाग्राम: https://www.instagram.com/prashanchinha.in

अनुक्रम

सम्पादकीय

कविताएँ

योगेंद्र पांडेय, जयचन्द प्रजापति 'जय'
शिरोमणि राम महतो, अवेद्य आलोक, जोस्ना जोस

कहानियाँ

प्रदीप कुमार राय
गणपत सिंह भदौरिया

आलेख

डॉ अनपुमा

समीक्षा

डॉ. सुमेधा पाठक

चिता पर खड़ा विकास और जलती हुई स्मृतियाँ

संपादकीय

विकास की अपनी एक भाषा होती है। उसमें परियोजनाएँ होती हैं, लागत होती है, आँकड़े होते हैं, बाँध होते हैं, नहरें होती हैं और भविष्य के सुनहरे वादे होते हैं। लेकिन मनुष्य की भी अपनी एक भाषा होती है - मिट्टी, नदी, जंगल, खेत, चूल्हा, घर और स्मृतियों की भाषा। जब विकास की भाषा और मनुष्य की भाषा एक-दूसरे को समझना बंद कर देती हैं, तब आंदोलन जन्म लेते हैं। और जब कोई समाज अपनी बात कहने के लिए चिता पर लेटने को विवश हो जाए, तब यह केवल किसी परियोजना का विरोध नहीं रह जाता, बल्कि विकास की पूरी अवधारणा के सामने एक गहरा प्रश्नचिह्न बन जाता है। केन-बेतवा नदी जोड़ परियोजना के विरोध में मध्य प्रदेश के पन्ना और छतरपुर अंचल में उभरा 'चिता आंदोलन' इसी प्रश्नचिह्न का नाम है। अप्रैल 2026 से सामने आए इस प्रतिरोध में आदिवासी महिलाओं और प्रभावित ग्रामीणों ने प्रतीकात्मक चिताओं पर लेटकर अपना विरोध दर्ज कराया। बाद में जल-सत्याग्रह, मिट्टी आंदोलन, चूल्हा बंदी और अन्य रूपों में यह प्रतिरोध सामने आया। जुलाई में भी आंदोलन के फिर तेज होने की खबरें आईं। यह दृश्य इसलिए विचलित करता है कि जिन लोगों के लिए सरकार विकास का भविष्य लेकर आई है, वही लोग अपने वर्तमान को बचाने के लिए मृत्यु का प्रतीक अपने सामने रखकर बैठ गए हैं।

किसी लोकतंत्र के लिए इससे बड़ा विरोधाभास क्या होगा कि जिस परियोजना को जीवन में पानी लाने का माध्यम बताया जा रहा हो, उसके विरोध में लोग चिता पर लेटकर कहें कि यदि हमारी जमीन, जंगल और घर छिनने हैं तो हमारे लिए यह विकास किस काम का?

केन-बेतवा परियोजना भारत की पहली बड़ी नदी-जोड़ परियोजना है जो कार्यान्वयन के चरण में पहुँची है। इसका उद्देश्य केन नदी के अतिरिक्त जल को बेतवा नदी की ओर स्थानांतरित करना है, ताकि बुंदेलखंड क्षेत्र में सिंचाई और पेयजल की उपलब्धता बढ़ाई जा सके। सरकारी दस्तावेजों के अनुसार परियोजना की अनुमानित लागत लगभग 44,605 करोड़ रुपये है।